तृतीय अध्याय

विवेच्य कहानियों में चित्रित प्रेम, प्रकृति तथा सौंदर्य

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR.

तृतिय अध्याय

विवेच्च कहानियों में चित्रित प्रेम, प्रकृति तथा सौंदर्य

प्रेम –

३.१ प्रेम का स्वरूप:–

प्रसाद के कहानियों में प्रेम का चित्रण किया है। प्रेम को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। प्रसाद ने शारिरिक प्रेम के साथ साथ सभी प्रेम के रूपों का चित्रण किया है। जीवन में प्रेम सबसे श्रेष्ठ है। प्रेम से ही मनूष्य जीवन मे आगे बढ़ सकता है। प्रेम से ही दूरिया मिटाकर हम नजदिक आ सकते है।

"मानवी जीवन विविध रसों से परिपूर्ण होता है। रसों की यह विविधता मनुष्य जीवन को सदाबहार बनाए रखती है। उनमे में से एक रस है प्रेम–रस। इस रस के कारण मानवी जीवन रसीला बनता है। इसी रस की अभिव्यक्ती के कारण साहित्य भी अमरता का प्राप्त करता है।"१ वैसे तो प्रेम शब्द के लिये विविध शब्द प्रर्याय के रूप मे प्राप्त होते हैं। जैसे प्रणय, अनुराग, रति, स्नेह, अनुरक्ति, प्रीति, प्यार। "'प्रेम' सं प्रेमन शब्द की व्युत्पत्ति अनेक प्रकार से की जाती है। तारानायवाचस्पत्य ने इसकी व्युत्पत्ति 'प्रिय' शब्द से की है। पियस्य भाव: इमनिंच प्रादेश: एकाच्कत्वात् न टिलोप: लिखकर प्रिय शब्द के साथ 'इमन' प्रत्यय का संयोग बताया है। 'प्रेम' शब्द 'प्री' धातु से मनिन प्रत्यय जोडकर बना हैं। अंग्रेजी में 'प्रेम' के लिए 'LOVE' शब्द प्रयुक्त किया जाता है।"२

प्रेम काम भी है। अंध प्रवृत्ति भी है। यौने भावना से संबंधित शारीरिक प्रक्रिया भी है। मानव को ईश्वरीय सामीप्य का आभास देनेवाला पुनित भाव भी है। कभी–कभी प्रेम इतने सत् धरातल पर विश्लेषित किया

---

१. डॉ. आशा मणियार – "प्रसाद साहित्य में प्रेम – भाव" – पृ. क्र. ११
२. वही – पृ. क्र. १२

गया है कि उसका शरीर भोग से अलग कोई अस्तित्व ही नहीं रह गया। तो कहीं प्रेम के कारण जीवन भौतिकता को तुच्छ समजकर सर्वस्व त्याग करने के लिए मानव तत्पर हो जाता है। किंतू वह स्वयं नहीं समज पाता कि यह लगाव क्यों है?

डॉ. आशा मणियार जी के अनूसार "प्रेम रोमांठीक प्रवृत्ति का प्रधान तत्व है। जब कोई भावुक या सहृदय व्यक्ति या किसी मनोवांछित सुंदर वस्तु, व्यक्ति या दृश्य को देखता है, तो उसके प्रति सहज रूप से ही उसके हृदय में रागात्मक भाव उत्पन्न हो जाता है। किसी सुंदर वस्तु, व्यक्ति या दृश्य के प्रति इस प्रकार के रागात्मक संबंध को ही प्रेम कहते हैं।" १

प्रेम की परिभाषा बनाना कठिन कार्य है। जीवन जितना वैविध्यपूर्ण और दुर्बोध है प्रेम उतना ही विवृत्त एवं गंभीर है। प्रेम आसमान से भी व्यापक और सागर से भी अधिक गहरा है। उसी तरह प्रेम को किसी परिभाषा में नहीं बांधा जा सकता।

३.२ मनुष्य जीवन में प्रेम का महत्व :–

मनुष्य जीवन में प्यार का महत्वपूर्ण स्थान है। मनुष्य जीवन प्रेम के बिना विरान बन जायेगा। प्रेम के कारण ही लोग त्याग और बलिदान करते हैं। प्रेम भावना के कारण ही माता–पिता बच्चों के लिए कष्ट उठाते हैं। पत्नी अपने पति के खातिर हर हाल में जीवन बिताती है। सुख: दुख में अपने पति का साथ देती है। जीवन की राह पर आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देती है। यह सभी प्रेम से संभव है। मनुष्य–मनुष्य से प्यार करता ही है परंतु धर्म, राष्ट्र, समाज से भी वह प्यार करता है। मनुष्य जीवन के लिए प्यार संजीवनी है जो हर हालत में जीवन हरा भरा रखने का प्रयास करती है। मनुष्य जीवन में प्रेम ही ऐसी कड़ी है जो दिलों की जोड़ती है, दो इन्सानों को जोड़ती है। प्रेम से मनुष्य सबकुछ हासिल कर सकता है।

---

१. डॉ. आशा मणियार – "प्रसाद साहित्य में प्रेम – भाव" – पृ. क्र. ११

३.३ विविच्य कहानियों में चित्रित प्रेम के विविध रूप:—

मनुष्य जीवन की प्रधान वास्तविकता प्रेम हैं। प्रसाद के भावजगत में प्रेम भावना को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। प्रसाद की मूल प्रेरक शक्ति 'प्रेम' थी। उनकी हर कृति में प्रेम के किसी न किसी रूप को वे चित्रित करते हैं। सफल प्रेम, असफल प्रेम, देशप्रेम आदि का उनके स्राहित्य में बहुत ही सुंदर एवं उत्कृष्ठ चित्रण हुआ है। प्रेम महान तो होता ही है पर वह दिव्य और अलौकिक भी होता है। उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से प्रेम के विभिन्न रूप चित्रित किये हैं। प्रसाद के 'आकाश—दीप' कहानी संग्रह में प्रेम के निम्नलिखित रूप पाये जाते है —

३.३.१ प्रथम दृष्टी प्रेम :—

मनुष्य जीवन में प्रेम का महत्व अनन्य साधारण है। प्रेम क्या होता है और कब होता है यह तो प्रेम करनेवाला और पानेवाला ही जान सकता हैं। प्रेम कब और किससे हो जाता है यह पता भी नहीं चलता। प्रसाद ने अपनी कहानी में प्रथम दृष्टी प्रेम का चित्रण किया है। पहली बार जब कोई किसीसे मिलता है और पहली नजर में ही उसे प्यार हो जाता है खुद उसे इस बात का पता भी नहीं चलता। इन्सान अपने आप को समर्पित कर देता है। प्रसाद ने 'सुनहला साँप' कहानी में प्रथम दृष्टी प्रेम का चित्रण किया है। 'सुनहला साँप' कहानी में चंद्रदेव ने सुनहले साँप के लिए शीशे का बक्सा बनाया था। उसमें साँप को रखने में रामू नेरा की मदद करता है। इस पर चंद्रदेव के मित्र उसके सेवक रामू की तारीफ करने लगे तो चंद्रदेव ने गर्व से रामू की ओर देखा परंतु "नेरा की मधुरिमा रामू की आखों की राह उसके हृदय में भर रही थी। वह एक टक से देख रहा था।" १

---

१. जयशंकर प्रसाद — "आकाश दीप" कहानी संग्रह — "सुनहला साँप"— पृ. क्र. ३९

यह जो प्रथम दृष्टी प्रेम या पहली नजर में होनेवाला प्रेम होता है, उसका चित्रण प्रसाद ने ''सुनहला साँप'' इस कहानी में किया हैं।

३.३.२ सफल प्रेम

प्रेम इन्सान की जरूरत है। प्रेम कभी सफल हो जाता है तो कभी असफल हो जाता है। जिस समाज में हम रहते हैं उस समाज के कायदे–कानून होते हैं। दो प्रेमी परस्पर प्रेम करते हैं लेकिन उनके प्रेम को समाज तभी स्वीकारता है जब वो दोनो परिणय के पावन मंगल बंधन में बंध जाते हैं। अत: प्रेम की सफलता विवाह से स्वीकार की जाती है। सफल प्रेम का दर्शन प्रसाद ने ''सुनहला साँप'' इस कहानी के माध्यम से दिखाया है। कहानी में चंद्रदेव, सेवक रामू और एक पहाड़ी युवती नेरा दोनों का काम एक ही है – साँप पकड़ना। मसूरी की पहाड़ पर वे दोनो जब मिलते हैं तो एक दुसरी की ओर आकर्षित हो जाते हैं। अत: रामू वहीं पर पहाड़ में ही रह जाता है। अत: रामू वही पर पहाड़ में ही रह जाता है। वे दोनों शादी कर लेते हैं। ग्यारह महीने बाद चंद्रदेव फिर से जब पहाड़ पर आता है तो होटल के शिशे से देखता है। ''रामू सिर पर पिटारा धरे चला जा रहा है और पीछे–पीछे अपनी मंद गति से नेरा–नेरा ने भी उपर की तरफ देखा, वह मुस्कराकर सलाम करती हुई रामू के पीछे चली गई।''१

इस प्रकार प्रसाद ने ''सुनहला साँप'' इस कहानी के माध्यम से नेरा और रामू का सफल प्रेम दिखाया है।

३.३.३ असफल प्रेम :–

प्रेम इन्सान को जीने कीं प्रेरणा देता है तो प्रेम की असफलता उसे जीते–जी मार ड़ालती है। कभी – कभी इन्सान जिसे प्यार करता है वो प्यार

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"सुनहला साँप" पृ.क्र. ४१

उसे मिलता है लेकिन कभी – कभी जिसे प्यार करता है वो उसे नहीं मिलता। इन्सान के पास अगर सब कुछ है लेकिन उसका प्यार उसका प्यार उसके साथ नहीं होता तो उसका जीवन निरर्थक बन जाता है। प्रेम में असफलता अनेक कारणों से आ सकती है जैसे जाति–भेद, धर्म–भेद, अमीरी–गरीबी, उच्च–निच्चता ये कारण हो सकते हैं। ऐसेही प्रेम की असफलता प्रसाद ने अपनी कहानी ''बनजारा'' के माध्यम से दिखायी है। ''बनजारा'' कहानी में बनजारे का चित्रण किया है। नंदू बनजारा है, व्यापर करता है। घुमना ही उसका जीवन है। बनजारों की टोली पर ड़कैत ड़ाका ड़ालते हैं तब नंदू पर्वत से कुदता है और जख्मी हो जाता है। मोनी सुबह उसके पास थी। मोनी के मन में नंदू से प्यार पनप रहा था। पुलिस का मामला मिटाकर नंदू वहां से चला जाता है। कुछ दिनों बाद नंदू दुबारा वहा पर आ जाता है तो मोनी से उसकी जो इच्छाएं हैं उससे निराश हो जाता है।

इस प्रकार प्रसाद ने ''बनजारा'' इस कहानी के माध्यम से प्रेम की असफलता का चित्रण नंदू और मोनी के माध्यम से किया है।

३.३.४ अलौकिक प्रेम :–

स्त्री और पुरूष का सच्चा प्रेम अलौकिक होता है। प्रेम की अलौकिकता इसमे हैं, एक बार प्रेम दिल में बस गया तो उसमे बदलाव नहीं होता। अब दो प्रेमी एक दूसरे के प्रेम में रंग जाते हैं तो उनका प्रेम और भी दृढ हो जाता हैं। प्रेम का और एक पहलू है – एकनिष्ठता। प्रेमी एक – दुसरे को पाकर इस दुनिया से अनजान बन जाते हैं। उनके प्रेम में इतनी ताकद होती है कि वे इस संसार से अलग होकर दुसरे संसार में जाकर अपने प्रेमी से मिलते हैं। इसका चित्रण प्रसाद ने ''हिमालय का पथिक'' इस कहानी के माध्यम से किया है। कहानी में स्वयं बनायी फुलों की मालो पथिक किन्नरी के बालों में लगा रहा था। किन्नरी के पिता – वृध्द – किन्नरी को देवता का निर्माल्य समझते हैं।

पथिक का यह कृत्य देखकर वे बौखला उठते हैं। तब पथिक कहता है "मैने देवता के निर्माल्य को और भी पवित्र बनाया है। उसे प्रेम को गंधजल से सुरभित कर दिया है। उसे तुम देवता को अपर्ण कर सकती हों।"१ इस प्रकार सच्चे प्रेम में बुराई नहीं होती हैं। किन्नरी और पथिक बर्फ में खो जाते हैं।

इस प्रकार प्रसाद ने "हिमालय का पथिक" इस कहानी के माध्यम से लौकिक प्रेम से अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना की है।

३.३.५ त्याग–समर्पण पूर्ण प्रेम :–

प्रेम भोग में नहीं बल्की त्याग में सफल हो जाता है। दूसरों के लिए अपने सुख का त्याग करना यही सच्चा प्रेम है। प्रेम को जितने के लिए इन्सान को कभी–कभी अपने प्रेमी को त्यागना पड़ता है। प्रेम देने से बढ़ता हैं। मनुष्य जीवन में कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है। सच्चा प्रेमी स्वार्थी नहीं होता। प्रेम इन्सान को ऐसा बना देता है कि उसमें शारीरिक आकर्षण या लालसा नहीं रहती। हजारों मिल दूर रहने पर भी प्रेम के कारण निष्ठा और आकर्षण वैसे ही जिंदगीभर बना रहता हैं। प्रसाद ने "आकाश–दीप" कहानी में त्याग–समर्पण पूर्ण प्रेम का चित्रण किया हैं। "आकाश–दीप" कहानी में बुध्दगुप्त अपनी प्रेमिका चंपा से उसके प्रेम को स्वीकार करने की बार–बार बिनती करता है। चंपा के लिए वह कुछ भी करने को तैयार हैं। अपने पूरे वैभव, पराक्रम, प्रतिष्ठा इतना ही नहीं तो अपने आत्मसन्मान को भी वह अपने प्रेम की खातिर कुर्बान करने को तैयार हैं। वह अपने हृदय की बात को स्पष्ट करते हुए कहता है – "आह चम्पा, तुम कितनी निर्दय हो। बुध्दगुप्त को आज्ञा देकर देखो तो वह क्या नहीं कर सकता हैं। नई प्रजा खोज सकता हैं, नये राज्य बना सकता है, उसकी परीक्षा लेकर देखो तो .....' कहो चम्पा। वह

---

१. जयशंकर प्रसाद–"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"हिमालय का पथिक"–पृ. क्र. ४५

कृपाण से अपना हृदय पिंड़ निकाल अपने हाथों अतल जल में विसर्जन कर दे।''१

इसप्रकार प्रसाद ने बुध्दगुप्त और चम्पा का प्यार त्याग से परिपूर्ण है यह दिखाया है। चम्पा उसी व्दीप पर रह आती है और बुध्दगुप्त स्वदेश लौटता है। यह चित्रण प्रसाद ने किया हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि सच्चा प्रेम पाने से ज्यादा खोने में होता हैं।

३.३.६ एक पक्षीय प्रेम :–

प्रेम करना या न करता इन्सान के बस की बात नहीं हैं। प्यार कब और किससे होता हैं यह पता नहीं चलता है। प्रेम तब सफल हो जाता हैं जब प्रेमी उसका स्विकार करें यी भी किस्मत की बात है। कभी – कभी ऐसा होता हैं कि, हम जिससे प्यार करते हैं वो किसी ओर से प्यार करता हैं। तब प्रेम एकपक्षिय हो जाता है। यह एकपक्षीय प्रेम प्रसाद ने ''देवदासी'' कहानी की माध्यम से दिखाया है। ''देवदासी'' कहानी की पद्मा देवदासी थी। शारीरिक भोग लेना उसके लिए पाप था। रामस्वामी उसके शरीर के प्रति आकृष्ट हो जाता है। वासना के आगे वह देवता का क्रोध सहने को तैयार था। परंतु पद्मा रामस्वामी के प्रति आकर्षित नहीं थी। पद्मा उसके प्रेम का स्वीकार नहीं करती उससे क्षमा मांगती हैं। रामस्वामी पद्मा के शरीर के ओर आकर्षित था पर पद्मा की आत्मा इस प्रेम का साथ निभाने को तैयार नहीं थी। इसप्रकार रामस्वामी का पद्मा के प्रति शारीरिक वासना की कामना से भरा प्रेम एक पक्षीय प्रेम हैं।

इसप्रकार प्रसाद ने ''देवदासी'' कहानी के माध्यम से रामस्वामी का एक पक्षीय प्रेम चित्रित किया है।

३.३.७ शारीरिक प्रेम :–

प्रेन का संबंध आत्मा से होता है। परंतु स्वार्थी लोग शारीरिक आकर्षण को प्रेम समझते हैं। प्रेम की पवित्रता को जान नहीं पाते है। शरीर की सुंदरता

---

१. जयशंकर प्रसाद–"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"आकाश–दीप"–पृ.क्र. १३

पर मोहित हो जाते हैं। प्रसाद ने शारीरिक प्रेम को ''देवदासी'' कहानी के माध्यम से दिखाया है।''देवदासी'' कहानी का रामस्वामी पद्मा के शरीर, सुंदरता पर आकर्षित हो जाता हैं। रामस्वाती धनी युवक था। फिर भी वह वासना में अंधा हो जाता है। लेकिन उसका प्रेम सफल नहीं हो जाता हैं। क्योंकी प्द्मा उससे प्यार नहीं करती है। रामस्वामी का मन केवल पद्मा के शरीर के लिए आकर्षित हो जाता है लेकिन उसे सुख नहीं मिलता।

इसप्रकार प्रसाद ने ''देवदासी'' इस कहानी में शारीरिक प्रेम का चित्रण किया हैं। राम्स्वामी की पद्मा के प्रति जो वासना है वह पूरी नहीं होती है। प्रसाद ने इस बात को स्पष्ट किया हैं कि सच्चा प्रेम वासना में नहीं होता बल्की मन से मन का मिलन होने में होता है।

३.३.८ वेश्याप्रेम:—

जब एक—दुसरे प्रति प्रेम हो जाता हैं तब यह देखा नही जाता कि सामनेवाला क्या है और कौन है। वेश्या की ओर देखने का समाज का दृष्टिकोन अलग होता है। वेश्या की सिर्फ शरीर को ही देखा जाता है, उसके दिल में झांकने की कोशिश कोई नहीं करता। वेश्या समाज में बदनाम होती हैं। कभी —कभी हालात या समाज उसे वेश्या बनाने के लिए मजबूर करता हैं। लेकिन वेश्या का भी दिल होता है जिसे वो किसी को देना चाहती है, किसीसे सच्चा प्यार करना चाहती है। किसी के प्रेम को पाने के लिए तड़पती है। परंतु समाज एसकी खुशी की पर्वा नहीं करता। यही बात प्रसाद ने अपनी ''चुडीवाली'' इस कहानी के माध्यम से दिखाई हैं। ''चुडीवाली'' कहानी में जब विजयकृष्ण बताता है कि यह व्यवसाय सबसे निकृष्ट है और कहानी की नायिका का स्वीकार नहीं करता है। तब इस कहानी की नायिका तिलमिलाकर कहती है, ''परंतु वेश्या का व्यवसाय करके भी मैने एक ही व्यक्ती से प्रेम किया था।''१

---

१. जयशंकर प्रसाद — "आकाश दीप" कहानी संग्रह —"चुड़ीवाली" पृ. क्र. ८७

इस प्रकार प्रसाद ने ''चुडीवाली'' इस कहानी के माध्यम से दिखाया है कि वेश्या के पास भी दिल होता है। वेश्या होकर भी वो एक व्यक्ती से ही प्रेम करती हैं। इस प्रकार शरीर को बेचना और प्रेम करना दो अलग बाते हैं। निष्प्रेम शारीरिक मिलन का सामना तो वेश्या को अनेक बार करना पडता हैं। वेश्या भी किसीसे प्रेम कर सकती इस बात को प्रसाद ने दिखाया हैं।

३.३.९ आदर्श काटि का प्रेम :–

सच्चा प्रेम त्याग में ही होता है। इस त्याग का रूप हमेशा एक जैसा नहीं होता है। कभी – कभी प्रेम के लिए प्रेमी को त्यागना पड़ता हैं। कभी समाज के लिए, अपने आदर्शों के लिए प्रेम को त्यागना पड़ता है। इसी बात को प्रसाद ने ''आकाश दीप'' कहानी के माध्यम से दिखाया है। कहानी की नायिका चम्पा बुध्दगुप्त से प्यार करती है। फिर भी उसका स्वीकार नहीं करती है। बुध्दगुप्त के लिए वह अपनी जान भी दे सकती है। लेकिन चम्पा बुध्दगुप्त को अपने पिता का हत्यारा मानती है यही बात उसके मन में रहती है। चंपा कहती है – ''यदि मैं इसका विश्वास कर सकती। बुध्दगुप्त, वह दिन कितना सुंदर होता, वह क्षण कितना स्पृहणीय! आह! तुम इस निष्ठुरता में भी कितने महान होते।''१

इसप्रकार प्रसाद ने चम्पा के आदर्श प्रेम का चित्रण किया है। बुध्दगुप्त से प्रेम करने पर भी पिता का हाथियारा समझकर उसका स्वीकार नहीं करती हैं। यही आदर्श प्रेम दिखाया है।

३.३.१० देश तथा संस्कृति प्रेम :–

मनुष्य जीवन में अनेक प्रकार का होता है। कभी एक–दुसरे के प्रति होत है तो कभी अपने देश के प्रति होता है। उसी तरह देश की संस्कृति के

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"आकाश दीप" पृ. क्र. १५

प्रति भी प्रेम होता है। उसकी खातिर वह अपना सब कुछ त्यागने के लिए तैयार होता है। यह बात प्रसाद ने ''ममता'' इस कहानी के माध्यम से दिखायी है। ममता के पिता मुगलों के हाथों मारे जाते हैं। एक दिन उसी मुगल को आश्रय की जरूरत पड़ती है तो ममता उसे अपनी झोपड़ी में आश्रय देती है। ममता अपने कर्तव्य का पालन करती हैं। हिंदू संस्कृति के अनुसार मेहमान भगवान का रूप होता है यह समझकर उस मुगल को आश्रय देती है। ममता सोचती है कि, ''मैं ब्राम्हणी हूँ, मुझे तो अपने धर्म अतिथि देव की उपासना का पालन करना चाहिए। परंतु यहाँ ..... नहीं नहीं, ये सब विधर्मी दया के पात्र नहीं। परंतु यह दया तो नहीं ..... कर्तव्य करना है।''१

इसप्रकार प्रसाद ने ''ममता'' इस कहानी में ममता के माध्यम से यह दिखाया है कि ममता को अपने देश तथा संस्कृति के प्रति प्रेम है और उसी प्रेम की खातिर वह मुगल को आश्रय देती है। ममता अपना देशप्रेम सफल बना देती है।

निष्कर्ष :–

इसप्रकार हम देखते है कि, प्रसाद के कहानियों में प्रेम के विविध रूप पाये जाते है। प्रेम से ही मनुष्य सबकुछ हासिल कर सकता है। अंधकारमय जीवन को उजाले की और ले जाने का काम प्रेम ही करता है। प्रसाद ने स्वच्छंद प्रेम का चित्रण अपनी कहानियोंके माध्यम से किया है।

---

१. जयशंकर प्रसाद – "आकाश दीप" कहानी संग्रह –"ममता" पृ. क्र. २०

प्रकृति:—

प्रस्तावना:—

कहानीकार अपनी कहानी में प्रकृति को चित्रित करता है। प्रकृति का चित्रण करते समय प्रकृति में आनेवाले पेड, नदी, नाले, झरणे, शिखर, फूल, पंछी आदि सब का चित्रण किया जाता है। प्रसाद ने भी अपनी कहानियों में प्रकृति को चित्रित किया है। प्रकृति के सभी रूपों का चित्रण किया है।

''संसार में प्रकृति अनेक रूपों में व्याप्त है। यह एक विराटे सत्ता है। यह कभी मधुर सुसज्जित रूप में हमारे सामने आती है कभी रूखे और कर्कश रूप में। यह कहीं सुंदर और विशाल है कहीं उग्र और भयंकर। अपनी चिर साहचार्य की भावना के कारण साहित्यकार प्रकृति के सभी रूपों में लीन होता है। वह केवल सुमनों के सौरभ संचार, मधुप गुंजार, कोयल की कूक से कूजित निकुंज और शितल समीर की ही चर्चा नहीं करता अपितु, सूर्य की प्रचंड किरणें, वर्षा ऋतू की भयानक रात और दहकती हुई चिता सहित भयंकर श्मशान का भी वर्णन करता है। साहित्यकार ने भोगलिप्सु है न ही तमाशबीन, वह सच्चा सहृदय है; अत: निर्झर का बहता हुआ जल तो उसे प्रभावित करता है, गिरिवर की कठारे चट्टाने भी उसका ध्यान अपनी और आकृष्ठ करती हैं। वाल्मीकी, कालिदास, भवभूति आदि संस्कृत के प्राचीन कवियों ने प्रकृति का साधारण और असाधारण सब प्रकार से चित्रण किया है। प्रकृति की रूप—विभूति के चित्रण में हमारे कवि आनन्द की अनुभुति प्राप्त करते हैं। भारत के ही नहीं पाश्चात्य कवियों ने भी साधारणे तथा असाधारण ढंग से प्रकृति चित्रण किया है।''१ ''अंग्रेजी के पिछले कवियों में वर्डसवर्थ की दृष्टी सामान्य में चिर—परिचित, सीधे—सादे प्रशान्त और मधुर दृश्यों की ओर रहती थी, पर शैली की असाधारण भव्य और विशाल की ओर।''२

---

१. डॉ. नरनारायण तिवारी – "हिन्दी कहानी में प्रकृति चित्रण"— पृ. क्र. ३७

२. आ. रामचंद्र शुक्ल चिन्तामणि, इण्डियन प्रेस, प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, १९७८, पृ. क्र. १०३

३.४ जयशंकर प्रसाद की 'आकाश–दीप' कहानी संग्रह में प्रकृति –

प्रसाद भावमूलक आदर्शवादी परम्परा के प्रवर्तक कहानीकार थें। इनकी कहानियों का केन्द्र बिंदु 'प्रेम' है। व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय प्रेम इनकी कहानियों में अभिव्यक्त हुआ है। छायावाद युग के महान कवि डॉ. उमाशंकर विशेष के अनुसार "जयशंकर प्रसाद प्रेमचन्द युग के महान् कहानीकार भी हैं। प्रसाद ने एक सफल कहानीकार के रूप में पर्याप्त, प्रतिष्ठा अर्जित की। 'आँधी', 'आकाश–दीप' और 'इन्द्रजाल' आदि में संकलित इनकी कहानियाँ न सिर्फ कहानी कला के दृष्टि से बल्कि सामाजिक समस्याओं के अभिव्यक्तीकरण की दृष्टि से भी अपना विशेष महत्व रखती हैं।''१

प्रसाद की कहानियों के प्रकृति–चित्रण में छायावादी मानवीकरण और प्रतीकात्मकता का प्रयोग पाया जाता है। 'आकाश–दिप' काहनी में प्रसाद ने आँधी का दृश्य प्रस्तुत किया है। इसमें प्रकृति पर मानवीय गुणों का आरोप किया है। मानव जीवन और प्रकृति एक–दुसरे के साथ–साथ चलते रहते हैं। प्रकृति के कारण ही मानवी जीवन बसा हुआ है। मगर कभी – कभी प्रकृति में कुछ परिवर्तन इस तरह का होता है जो आँधी बनकर, बादल बनकर, कभी – कभी इन्सानी जीवन को पीड़ित बनाता है। मानवी जीवन को शक्ति और प्रेरणा देनेवाली यह प्रकृति कभी–कभी ऐसा रूप धारण करती है जिससे मानव संकट की गहराई में खो जाता है। प्रसाद की 'आकाश–दीप' कहानी में इसी आँधी भरे जीवन को चित्रित करने का प्रयास नजर आता है। ''तारक–खचित नील अंबर और समुद्र के अवकाश में पवन उधम मचा रहा था। अंधकर से मिलकर पवन दुष्ट हो रहा था। समुद्र में आंदोलन था। नौका लहरों में विकल थी।"२

---

१. सं. डॉ. दिवाकर, दृष्टि पत्रीका, दृष्टि प्रकाशन, नवादा। जयशंकर प्रसाद विशेषांक, अप्रैल, दिसम्बर, १९८९ अंक, पृ. क्र. १४५

२. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"आकाश दीप" पृ. क्र. ८

प्रकृति में फूल एक ऐसा हिस्सा है जो सुंदर, कोमल और अपनी गंध से सभी को अपनी और खिंच लेता है। आम इन्सान से लेकर लेखक और कवियों को अपना गीत गाने के लिए मजबूर कर देते हैं। प्रसाद की कहानी 'देवदासी' में इसी फूलमाला को मानवी जीवन की संवेदना और उसकी भावनाओं का लेन–देन करने का एक जरिया बनाया गया है। प्रसाद के साहित्य में अलग – अलग फूलों का रंग, गंध और कोमलता का चित्रण जगह – जगह पर हमें पढ़ने को मिलता है। प्रकृति का एक अनोखा सौंदर्य हमें प्राप्त होता है, मगर उसके संपर्क में आने की, वहज से हम भी फूल को ही अपने जीवन का एक हिस्सा बना देते हैं। 'देवदासी' इस कहानी में प्रसाद ने फूलों के इस मनोहारी रूप का चित्रण किया हैं। प्राकृतिक गंध का चित्र भी प्रसाद की कहानियों में मिलता हैं। इनकी 'देवदासी' कहानी पत्र की शैली में लिखी गई है। पूरी कहानी में पत्रों का आदान–प्रदान है। इसमें वर्णित एक प्राकृतिक चित्र उल्लेखनीय है –'' मधुमास में जंगली फूलों की भीनी भीनी महक सरिता के फूल की शैलमाला को आलिंगन दे रही थी। मक्खियों की भन्नाहट का कलनाद गुंजारित हो रहा था। नवीन पल्लवों के कोमल स्पर्श से वनस्थली पुलकित थी। मैं जंगली जर्द चमेली के अकृत्रिम कुंज के अंतराल में बैठा, नीचे बहती हुई नदी के साथ बसन्त की धूप का खेल देख रहा था। हृदय में आशा थी। अहा; वह अपने तुहिन जाल से रत्नाकर के सब रत्नों को, आकाश से सब मुक्ताओं को निकाल, खींचकर मेरे चरणों में उझल – उझल देती थी। प्रभात की पिली किरणों से हेमगिरी को घसीट ले आती थी पद्मा की मौनप्रणय स्वीकृति में भी आज वन–यात्रा के साथ इस वनस्थली में आया था।''१

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"देवदासी" पृ. क्र. ६६

''स्वर्ग के खंडहर में'' यह प्रसाद की ऐतिहासिक कहानी है। इस कहानी में प्रकृति का मन को आकर्षित करनेवाला रूप चित्रित किया नजर आता है। प्रकृति में फूल के साथ–साथ पेड, पौधें, लता आदि की भरमार होती है। इन विशाल जंगलों में तरह–तरह के फल और फूलों का अलग सा नजारा हमें दिखाई देता है। फल हमें खाने के लिए लालायित करनेवाला होता है तो फूलों की गंध हमें अपने आप में न रहकर उसकी ओर खींच लेती है। प्रकृति के इन हिस्सों में विशाल पर्वत पहाड़ों का जिक्र भी है। जिन पहाड़ों में अलग–अलग गूँफाएँ बनाकर हमारे ऋषीजन उन प्राकृतिक विरासत में समा जाते हैं। ऐसे ही प्रकृति के सौंदर्य और गूँफाओं का चित्रण हमें ''स्वर्ग के खंड़हर में' इस कहानी में नजर आता है। इसमें वर्णित एक प्राकृतिक चित्रण है – ''वन्य कुसुमों की झालरें सुख शीतल पवन से विकंपित होकर चारों ओर झूल रही थीं। छोटे–छोटे झरनों की कुल्याएँ कतराती हुई बह रही थीं। लता वितानों सें ढ़ँकी हुई प्राकृतिक गुफाएँ शिल्प – रचना – पूर्ण सुंदर प्रकोष्ठ बनती, जिसमें पागल कर देनेवाली सुगंधे की लहरें नृत्य करती थीं। स्थान–स्थान पर कुजों और पुष्पशय्याओं का समारोह, छोट–छोटे विश्रामगृह, पान – पात्रों में सुगंधीत मदिरा, भाँति–भाँति के सुस्वादु फल – फूलवाले वृक्षों के झुरमुट, दूध और मधु की नहरों के किनारे गुलाबी बादलों का क्षणिक विश्राम चाँदनी का निभृत रंगमंच, पुलकित वृक्ष – फूलों पर मधुमाक्मियों की भन्नाहट, रह–रहकर पक्षियों की हृदय में चुभनेवाली तान, मणिदीपों पर लटकती हुई मुकुलित मालायें।''१

प्रकृति में मौसम के अनुसार बदलाव या परिवर्तन होते रहते हैं। बारिश के दिनों में प्रकृति एक नया रूप ले – लेती है। बारिश मानवी जीवन और प्रकृति के लिए जरूरी बात है। आषाढ़ हो या श्रावण मास हो बारिश का अलग ढ़ंग का नजारा हमें नजर आता है। काले बादल कभी भी आने की संभावना होती है तो पशू से लेकर मानव तक सभी अपने – अपने काम की

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह –"स्वर्ग के खँडहर में" पृ. क्र. २३

खोज में बाहर निकल पड़ते हैं। बारिश सब काम रूकवा सकती है इसका अंदाजा इन सभी को होता है। पंछी खुले आसमान की सैर करना चाहते हैं। इन्सान अपने काम पूरे करने के चक्कर में होता है। आम के वृक्षों में कोयल अपनी पूकार बार–बार लगाकर बादल को बुलावा देती रहती है। इसिका चित्रण ''प्रतिध्वनी'' इस कहानी में हमें पढ़ने को मिलता है। आषाढ महिने में प्रसाद ने ''प्रतिध्वनी'' इस कहानी में किया है। इसमें वर्णित एक प्राकृतिक चित्रण इसप्रकार है – ''आषाढ़ का महीना था। सबेरे ही बड़ी उमस थी। पुरवाई धन – मंड़प स्थिर हो रहा था। वर्षा होने की पूरी संभावना थी। पक्षियों के झुंड़ आकाश में अस्त–व्यस्त घूम रहे थे। एक पगली गंगा के तट के उपर की ओर चढ़ रही थी। वह अपने प्रत्येक पाद–विक्षेप पर एक–दो–तीन अस्फुट स्वर से कह देती, फिर आकाश की ओर देखने लगती थी। अमराई के खुले फाटक से वह घुस आई, और पास के वृक्षों के नीचे घूमती हुई 'एक–दो–तीन' करके गिनने लगी।''१

प्रसाद ने प्रकृति का वर्णन में समुद्र का चित्रण भी किया है। समुद्र के उठनेवाली हर लहर पर तरंगें होती हैं जो हमें आकर्षित करती हैं। समुद्र में घुमने का मजा भी अलग होता है। सूरज की किरणे जब पानी पर पड़ती हैं तो चमकने लगती हैं। पवन के आने से समुद्र में लहरें आ जाती हैं। इसी तरह जब शाम का समय होता है तो सूरज बड़े प्यार से समुद्र में डुबकर रहना चाहता है। इसका चित्रण प्रसादने ''समुद्र–संतरण'' इस कहानी में किया है। इसमें वर्णित एक प्राकृतिक चित्रण है – "क्षितिज में नील जलधि और व्योम का चुम्बन हो रहा है। शांत प्रदेश में शोभा की लहरियाँ उठ रही हैं। गोधूली करूण प्रतिबिंब, बेला की बालुकामयी भूमि पर दिंगत की तीक्षा का आवाहन कर रहा है। नारिकेल के निभृत कुंजों में समुद्र का समीर अपना नीड़ खोज रहा

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"प्रतिध्वनि" पृ. क्र. ५२

था। सूर्य लज्जा या क्रोध से नहीं, अनुराग से लाल, किरणों से शून्य, अनंत रसनिधि में डूबना चाहता है। लहरियाँ हट जाती हैं। अभी डूबने का समय नहीं है, खेल रहा है।''१

प्रसाद की कहानियों में पहाड़, पेड़, पौधों का सुंदर चित्रण हमें नजर आता है। ऊँचे–ऊँचे पहाड़ उस पहाड़ पर सजे अलग – अलग पेड़ चित्रित किये नजर आते हैं। देश के हर विभाग के पहाड़ों पर एक ही तरह के पेड़, पौधे, फल, फूल नहीं होते हैं। हर एक की अपनी एक खाँसियत है। प्रकृति की अपनी एक अलग पहचान होती है। प्रसाद के साहित्य मे इन पहाड़ों और पहाड़ों का सौंदर्य बढ़ानेवाली अलग–अलग जाती के पौधों का अनुखा चित्रण हमे नजर आता है। ऐसा चित्रण प्रसाद ने ''वैरागी'' इस कहानी में किया है। इसमे वर्णित प्रकृति चित्रण – ''पहाड़ की तलहटी में एक छोटा – सा समतल भूमिखंड था। मौलसिरी, अशोक, कदम और आम के वृक्षों का एक हरा–भरा कुटुंब उसे आबाद किये हुए था। दो–चार छोटे–छोटे फूलों के पौधे कोमल मृत्तिका के थालों में लगे थे। सब आर्द्र और सरल थे। तपी हुई लू और प्रभात का मलय – पवन एक क्षण के लिए इस निभृत कुंज में विश्वास कर लेते। भूमि लिपी हुई स्वच्छ एक तिनके का कहीं नाम नहीं और सुंदर वेदियों और लता – कुंजो से अलंकृत थी।"२

हिंदी साहित्य की कहानियों में प्रकृति का चित्रण हर जगह नजर आता है। प्राचीन काल से आज तक हर एक ने प्रकृति के विराट रूप को चित्रित करने का प्रयास किया है। पहाड़ों के टेढ़े–मेढ़े रास्तें, अलग ढ़ंग की मिट्टी, खेतों से हरि – भरी धरती और उस रास्ते पर निकला हुआ पथिक और उसका चित्रण साहित्य का एक महत्वपूर्ण अंग है। प्रसाद के साहित्य में ऐसे टेढ़े – मेढ़े रास्तें, कुदरत की करिश्मा से सजी हुई धरती और उस पर चलेने वाले राही का चित्रण भी हमें प्रसाद की ''बनजारा'' इस कहानी में नजर आता

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"समुद्र संतरण" पृ.क्र. ७०
२. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"वैरागी" प. क्र. ७४

हैं – ''धीरे धीरे रात खिसक चली, प्रभात के फूलों के तारे चू पड़ना चाहते थे। विंध्य की शैलमाला में गिरी – पथ पर एक झुंड़ बैलों का, बोज लादे आता था। रात के बनजारे उनके गले की घंटीयों के मधुर स्वर में अपने ग्रामगीतों का आलाप मिला रहे थे। दीर्घ पथ पर किसी को खोजता हुआ दौड़ रहा था।''१

प्रसाद के प्रकृति चित्रण में पेड़, पौधें, फल, फूलों के साथ पंछियों के जीवन का और उनकी मीठी आवाज का चित्रण हमें पढ़ने को मिलता है। पंछियों की आवाज भी बहुत मीठी होती हैं। पंछियों का एक–दुसरे के प्रति प्रेम भी होता है। जिस तरह इन्सान बोलकर अपनी भावनाओं को दूसरे दन्सान के सामने प्रगट करता है, उसी तरह पंछी भी अपनी भाषा में अपनी भावनाओं को प्रगट करते हैं। इनकी प्रेम भावना को भी बड़े रोचक ढ़ंग से चित्रित किया है। एक चिड़ियाँ का चित्रण प्रसाद ने ''चुड़ीवाली'' कहानी के माध्यम से किसा है। इसमें वर्णित प्रकृति का वर्णन है– ''पास ही अनार का वृक्ष था, उसमें फूल खिले थें। एक बहुत ही छोटी चिड़ियाँ उन फूलों में चोंच ड़ालकर मकरंद – पान करती और कुछ केसर खाती, फिर हृदयविमोहक कल – नाद करती हुई उड़ जाती।''२

हिंदी साहित्य की कहानियों में सुबह का सुनहरा चित्रण हमें नजर आता है। सूरज की कोमल किरणें जब धरती पर आ जाती हैं तो प्रकृति के खूबसूरती में सुंदरता और बढ़ जाती हैं। कभी तृणों पर रहे जल बिंदू का नजारा, अलग–अलग फूलों के रंग के कारण सूरज की किरणें भी उसी रंग में रंग जाती है। प्रसाद की कहानियों की यह भी एक खाँसियत है। सुबह की प्रकाश किरणों से प्रकाशमय बनी धरती का सुंदर नजारा ''अपराधी'' इस कहानी में दिखाई देता हैं। ''अपराधी'' इस कहानी में प्रसाद ने सूरज की पड़नेवाली पहली किरणों का वर्णन किया है। इसमें वर्णित प्रकृति चित्रण है – ''वनस्थली

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"बनजारा" पृ.क्र. ७७
२. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"चूडीवाली" पृ.क्र. ८४

के रंगीन संसार में अरूण किरणों ने इठलाते हुए पदार्पण किया और वे चनक उठी, देखा तो कोमल किसलय और कुसुमों को पंखुरियाँ, वसंत–पवन के पैरों के समान हिल रही थीं। पीले पराग का अंगराग लगने से किरणें पीली पड़ गई वसंत का प्रभात था।''१

प्रसाद की कहानी में प्रकृति में होनेवाली ऋतु के अनुसार बदलाव का चित्रण हमें दिखाई देता है। वसंत का अलग रूप, ग्रीष्म ऋतु का अलग रूप और वर्षा का एक अनोखा रूप प्रसाद के साहित्य में हमें चित्रित हुआ नजर आता है। वसंत ऋतु की शांती, ग्रीष्म की जलन में जलकर प्रकृति और इन्सान हैरान हो जाते है, तो वर्षा की धारा उसको ठंड़ा बना देती है और प्रकृति हरी–भरी नजर आती है। वसंत के बीत जाने पर प्रकृति में होनेवाला बदलाव प्रसाद ने ''अपराधी'' इस कहानी के माध्यम से चित्रित किया है। इसमे वर्णित प्रकृति चित्रण है– ''वसंत बीत गया। गर्मी जलाकर चली गई। कानन में हरियाली फैल रही थी। श्यामल घटाएँ आकाश में और हास्य–शोभा धरणी पर एक सघन सौंदर्य का सृजन कर रही थी। वन – पालिका के चारों ओर मयूर घेरकर नाचते थे। संध्या में एक सुंदर उत्सव हो रहा था। रजनी आई। वनपालिका के कुटीर तम ने घेर लिया। मूसलधार वृष्टि होने लगी। युवती प्रकृति का मद–विव्हल लास्य था।"२

हिंदी कहानियों के प्रकृति चित्रण में संध्या समय का चित्रण भी सहज ढ़ंग से चित्रित हुआ नजर आता है। संध्या के समय प्रकृति में होनेवाली जो एक अलग गुमसुम माहोल होता है और उसके साथ प्रकृति में एक सुन्नाटा सा छा जाता है। प्रकृति का सौंदर्य संध्या के समय मलिन हो जाता है। चांदनी रात एक अलग माहोल बनाया रखती है। इस तरह के संध्या के समय के प्रकृति का चित्रण ''प्रणय–चिहन्'' इस कहानी में प्रसाद ने किया है। इसमें वर्णित प्रकृति चित्रण है – ''जहाँ तक दृष्टि दौड़ती है, जंगलों की हरियाली।

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"अपराधी" पृ.क्र. ८८
२. वही – पृ.क्र. ९०

उनसे कुछ बोलने की इच्छा होती है, उत्तर पाने की उत्कंठा होती है। वे हिलकर रह जाते हैं, उजली धूप जलजलाती हुई नाचती निकल जाती है। नक्षत्र चूपचाप देखते रहते हैं– चाँदनी मुसकराकर घूँघट खींच लेती है। कोई बोलनेवाला नहीं! मेरे साथ दो बातें कर लेने की जैसी सबने शपथ ले ली है। रात खुलकर रोती भी नही – चुपचाप ओस के आँसू गिराकर चल देती है।''१

हिंदी कहानियों के प्रकृति चित्रण में विशाल नदियों की तटरेखा एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। गंगा के किनारे बसे पवित्र शहर काशी के तट पर विराजमान हमारे प्राचीन सभ्यता के मंदिर हैं। उस तट पर भारत के विभिन्न प्रदेश से आए हुऐ अलग–अलग वेश भुषा और भाषाएँ बोलनेवाले लोग हमें नजर आते हैं। प्रसाद ने भी अपनी कहानियों में नदियों के किनारे बसे पवित्र स्थल और लोगों के मेले का चित्रण अपनी कहानियों में रोचक ढ़ंग से किया हैं। जान्हवी तट का वर्णन प्रसाद ने ''रूप की छाया'' इस कहानी के माध्यम से किया है। इसमें वर्णित प्रकृति चित्रण है – ''काशी के घटों की सौध–श्रेणी जान्हवी के पश्चिम तट पर धवल शैलमाला सी खड़ी है। उसके पीछे दिवाकर छिप चुके। सीढ़ियों पर विभिन्न वेश–भूषावाले भारत के प्रत्येक प्रांत के लोग टहल रहे हैं। कीर्तन, कथा और कोलाहल से जान्हवी–तट पर चहल पहल है।"२

हिंदी कहानियों में प्रकृति के सुंदरता का नजारा चित्रित कर दिया है। मगर कुदरत का यह नजारा सुबह अलग ढ़ंग का होता है, दोपहर उसका रूप अलग होता है, शाम की सुनहरी किरणों का रूप मनोहारी होता है और रात के रजनी का अंधकार जब इन सबको अपने घेरे में लेता है और उनका अस्तित्व अंधकारमय बना देता है। रात के समय प्रकृति में एक सन्नाटा – सा हो जाता है। इन्ही रूपों का चित्रण प्रसाद की ''ज्यातिष्मती'' इस कहानी में नजर आता

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"प्रणय–चिहन्" पृ.क्र. ९४
२. जयशंकर प्रसाद–"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"रुप की छाया" पृ.क्र. १००

है। इसमें प्रसाद ने अंधकार का चित्रण किया है। इसमें वर्णित प्रकृति चित्रण है – "तामसी रजनी के हृदय में नक्षत्र जगमगा रहे थें। शीतल पवन की चादर उन्हें ढ़ँक लेना चाहती थी, परंतु वे निविड़ अंधकार को भेदकर निकल आये थें, फिर यह झीना आवरण क्या था। बीहड़, शैल–संकुल वन्य प्रदेश. तृण और वनस्पतियों से घिरा था। वंसत की लताएँ चारों ओर फैली हुई थीं! हिमवान की उच्च उपत्य का प्रकृति का एक सजीव, गंभीर और प्रभावशाली चित्र बनी थी!" १

रजनी काल में प्रकृति में होनेवाले बदलाव का चित्रण उसका अनोखा और अलग रूप हमें हिंदी कहानियों में नजर आता है। इसीतरह रजनी के काल के चतुर्थी के चंद्रमा का मनोहारी रूप और उसका प्रकृति पर दिखाई देनेवाला एक अलग तरह का माहोल खड़ा करने का काम प्रसाद ने अपनी कहानी "ज्योतिष्मती" में दिखाया है। इसमें आया प्रकृति चित्रण है– "श्यामा सधन, तृण–संकुल शैल–मंडल पर हिरण्यलता तारा के समान फूलों से लदी हुई मंद मारूत से विकंपीत हो रही थी। पश्चिम में निशीथ के चतुर्थ प्रहर में अपनी स्वल्प किरणों से चतुर्दशी का चंद्रमा हँस रहा था। पूर्व प्रकृति अपने स्वप्न–मुकुलित नेत्रों को आलस से खोल रही थी। वनलता का बदन सहसा खिल उठा। आनंद से हृदय अधीर होकर नाचने लगा।"२

प्रसाद के साहित्य में और अन्य साहित्यीकारों के साहित्य में प्रकृति के अलग–अलग रूपों का चित्रण किया है। उसमे पेड़, पौधे, पर्वत, नदी, झरनें, फल, फूल और शैलमाला का चित्रण भी हमें पढ़ने को मिलता हैं। प्रसाद के साहित्य में भी 'रमला' इस कहानी में प्रकृति में दिखाई देनेवाले शैल और उसके इर्द – गिर्द लहरानेवाले समंदर इसका चित्रण उन्होंने इस कहानी में चित्रित किया है। सुबह कि किरणों का शैलखंड़ और उसके गोद में खिलनेवाले पानी

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"ज्योतिष्मती" पृ.क्र. १०४
२. वही – पृ. क्र. १०५

का सुनहरा चित्रण और साथ – ही साथ संध्या के समय दिखाई देनेवाली चाँदनी और चाँद की रोषनी में शैलखंड़ और नीला समंदर कैसे लुभावना होता है उसका चित्रण किया हैं। इसका चित्रण प्रसाद ने ''रमला'' इस कहानी में किया हैं। इसमें आया प्रकृति चित्रण है – ''शैलमाला की गोद में वह समुद्र का शिशु कलोल करता उसपर से अरूण की किरणें नाचती हुई, अपने को शीतल करती चली जातीं। मध्यान्ह में दिवस ठहर जाता – उसकी लघु वीचियों का कंपन देखने के लिऐ। संध्या होते, उसके चारो ओर के वृक्ष अपनी छाया के अंचल में छिपा लेना चाहते; परंतु उसका हृदय उदार था, मुक्त था, विराट् था चाँदनी उसमें अपना मुँह देखने लगती और हँस पड़ती।''१

प्रकुति का चित्रण प्राचीन काल से हमारे कवियों, ऋषी, मुनियों और महाकाव्य में पन्ने–पन्ने पर नजर आता है। इस विरासत का सिलसिला आगे बढ़ाने का काम हमारे हिंदी साहित्य में कवि, कहानीकार, उपन्यासकार, आदि ने कर दिया है। हिमालय की गोद में पलनेवाले छोटे–छोटे गाँव और उसका प्राकृतिक सौंदर्य हमारी कहानियों में चित्रित किया हैं। पहाड़ों के नीचे बसनेवाले छोटे गाँव, उन झोपडियों में रहनेवाले लोग और उसके इर्द–गिर्द फल, फूलोंसे भरी धरती और उसी फूलों की गंध पास – पड़ोस के झोपड़ीयों में भर जाती है। झरनें के गित सुनाई पड़ते हैं। इस तरह का चित्रण प्रसाद की कहानी ''बिसाती'' में दिखाई देता है। इसमें आया प्रकृति चित्रण है– '' उदयान की शैल–माला के नीचे एक हरा–भरा छोटा–सा गाँव है। वसंत का सुंदर समीर उसे आलिंगन कर के फूलों के सौरभ से उसके झोंपड़ों को भर देता है। तलहती के हिम–शीतल झरने उसको अपने बहुपाश में जकड़े हुए हैं। उस रमणीय प्रदेश में एक स्निग्ध–संगीत निरंतर चला करता है, जिसके भीतर बुलबुलों का कलनाद, कंप और लहर उत्पन्न करता है। दाड़िम के लाल फूलों की रंगीली छाया संध्या की अरूण किरणों से चमकीली हो रही थी।''२

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"रमला" पृ.क्र. १०७
२. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"बिसाती" पृ.क्र. १०७

निष्कर्ष :–

प्रसाद के प्रकृति–चित्रण में कल्पना की ऊँचाई, सौंदर्य की परख, भावनाओं का गुम्फन, सृजन की मौलिकता, प्रवाहमय अभिव्यक्ती, संवेदना की उत्कर्षता तथा असाधारण चित्रात्मकता है। भावों के अंकन में लेखक के प्रकृति – चित्र सहायक सिध्द हुए हैं।

सौंदर्य:–

प्रस्तावना:–

कहानीकार अपनी कहानियों में सौंदर्य का चित्रण करता है प्रसाद के कहानियों में प्रेम और प्रकृति के साथ साथ सौंदर्य का भी चित्रण किया है।

''साहित्य का अपना साहित्यशास्त्र तथा रसशास्त्र है। 'सौंदर्य' का अपना कलाशास्त्र और चिन्ह–विज्ञान (सेमिओटिक्स) है। इसलिए साहित्य के सौंदर्यबोधशास्त्र की प्रकृति एक तो तुलनात्मक है, दूसरे इसमें काम से कम दो अथवा अधिक कलाओं के माध्यमों की एकतान अभिव्यंजना के कारण इसका स्वरूप संश्लेषणात्मक भी है; तथा तीसरे इसमें प्रथम कलाविदया तो साहित्य है जो भाषिक एवं वाचिक है, किन्तू दूसरी कला ईकाई सौंदर्यबौध के वृत्त में वास्त्यायनीय चौंसठ में से कोई भी कला अथवा आधुनिक विशाल कलापुंज में चित्रकला, मूर्तिकला से लेकर कोई भी निर्भाषिक (नान–वर्बल) कला, या दूरदर्शन द्वारा प्रसारीत कोई गतिशिल रंगदार चित्र एवं भू–उपग्रह (सेटेलाईट) द्वारा प्रक्षेपित चतु:आयामी इलेक्ट्रॉनिक ब्रम्हाण्डीय शब्द–गूँज हो सकती है। इस तरह साहित्य के सौन्दर्यबोधात्मक होगा। इसमें हमें पहली आरम्भिक इकाई शब्दार्थ या काव्यबिम्ब की अपेक्षा सौंदर्यबोधात्मक चिन्ह (एस्थेटिक साइन) माननी होगी। तुलना की दृष्टि से यह नई शुरूआत है।''१

सौंदर्यबोधात्मक आयाम में 'आकाशदीप' में सौंदर्य के सुखात्मक–दुखात्मक, उदात्त–भयानक, आनन्दपूर्ण–करूण स्तर एक साथ मिलते हैं।

---

१. डॉ. रतनकुमार पाण्डेय –"साहित्य, सौन्दर्य और संस्कृति" – पृ.क्र ४४

३.५ जयशंकर प्रसाद के 'आकाश – दीप' कहानी संग्रह में सौंदर्य –

''प्रकृति–सौन्दर्य ललित और मोहक है, नारी–सौंदर्य (चम्पा का) उत्तेजक और संयमशील, रमणीय और रहस्यपूर्ण है। यह उज्ज्वलता की ओर ऊँचे उठता है। कथा संरचना के द्वितीय खण्ड में ऐसा ही सौन्दर्य व्यापार है। प्रथम खण्ड में प्रकृति सौन्दर्य अतिप्राकृतिक तथा अतिमानवीय उभयात्मक। यह भीषण, विकराल, रौद्र, शान्त है। नारी (चम्पा) सौन्दर्य पेशल, शोभाशाली, कान्तियुक्त, उन्मादपरक है। बुध्दगुप्त का नैतिक सौंदर्य शौर्यपूण, आक्रोशपूर्ण, क्षमाशील है। नायक का कायर तथा मणिभद्र का कामुक स्वभाववाला है।''१

तृतीय खण्ड में – वैभव, ऐश्वर्य एवं विलास की सुख–सुविधा के बीच बुध्दगुप्त और चम्पा का मन नहीं लगता है। चम्पा के पिता की मृत्यू हमेशा याद दिलाती रहती है।

"चौथे और अंतिम खण्ड में आकाशदीप की उँचाई पर जल उठना सौन्दर्य की उज्ज्वलता, प्रणय में बलिदान तथा जीवन में परित्याग के श्रेयों को जगमगाता है।'' २

''स्वर्ग के खण्डहर इस कहानी में भी रूप–सौन्दर्य की चमत्कारिकता से पात्रों की उत्कृष्टता दमक उठी है। ऐसा सौन्दर्य सहृदय को अभिभूत कर लेता है।''३

''आकाश दीप कहानी में वनवासियों के समारोह में चम्पा को वनदेवी जैसा सजाया जाना 'श्री' रूप है। वह ताम्रलिप्ती के बहुत से सैनिकों और नाविकों की कतार में वनकुसुमविभूषिता होकर शिविका में आरूढ़ आती है। श्री – सौन्दर्य का यह प्रभाग विलक्षण है। 'लावण्य की कोटि में कोमलता, मधुरता, रमणीयता, दीप्ति की उपसौन्दर्य कोटियाँ शामिल की जा सकती हैं। ये सभी इस कहानी में यत्र – तत्र बिखरी पड़ी हैं। इसके कथातंत्र में रूपगत असौन्दर्य

---

१. डॉ. रतनकुमार पाण्डेय –"साहित्य, सौन्दर्य और संस्कृति" – पृ.क्र. ६५
२. वही – पृ.क्र. ६५
३. वही – पृ.क्र. ६५

की 'भीषणता' तथा विकरालता (प्रकृति की : पिता हत्या की) मुख–मुद्राओं के तथा प्रकृतिपटल के रंग बदलने से दिखाई गई है। 'भयानकता' चम्पा के प्रतिशोध निष्ठुरता में संलक्षित होती है।''१

"भारतीय साहित्य में नारी सौंदर्य को ज्यादा महत्व दिया है। अधिकांश साहित्य नारी–विरह एवं नारी–सौन्दर्याकन (नखशिख चित्रण) से परिपूर्ण है। नारी भारतीय सौन्दर्यबोध का प्रतिमान है। हिन्दी साहित्य के बहुतांश कवियों ने नखशिख वर्णन विभिन्न प्रतिमान एवं उपमान आकलित किए हैं।"२ प्रसाद ने 'कामायनी' में श्रध्दा का रूप वर्णन बहुतही सुंदर तरह से किया है।

हमारे प्राचीन साहित्य में काव्य, नाटय सभी में हर तरह का चित्रित किया है। नारी के सौन्दर्य के साथ–साथ कवि ने प्रकृति का भी सौंदर्य चित्रण किया है। हमारे देश के शिल्पियों ने बनाये प्राचीन मंदीर सौंदर्य का उत्त्म उदाहरण है। रीतिकाल के कवियों ने भी राधा का भी नखाशिख चित्रण किया हैं। इस तरह से संपूर्ण हिंदी साहित्य में सौंदर्य का चित्रण किसी न किसी रूप में किया है।

''आकाश–दीप'' कहानी में प्रसाद ने सौंदर्य का चित्रण भी अनूखा कर दिया है। उनकी इस कहानी में पेड़, पौधे, फूल, फल और उसपर सूरज की किरणों का, और चंद्र के प्रकाश का जो सुंदर परिणाम होता है उसका सौंदर्य चित्रण रोचक ढ़ंग से किया है। बालीद्वीप का जो प्राकृतिक सौंदर्य है उसको शब्दों के माध्यम से उचित ढ़ंग से सजाया है। जल के आलोकमय रूपों का चित्रण प्रसादजी के कहानी का एक अंग है। चंपा के रूप वर्णन से व्यक्ती के सौंदर्य का चित्रण भी हुआ है। ''आकाश–दीप'' कहानी में आया सौंदर्य चित्रप है – ''उसके मन में एक संभ्रमपूर्ण श्रध्दा यौवन की पहली लहरों को जगाने लगी। समुद्र–वक्ष पर विलंबमयी राग–रंजित संध्या थिरकने लगी। चम्पा के

१. डॉ. रतनकुमार पाण्डेय –"साहित्य, सौन्दर्य और संस्कृति" – पृ.क्र. ७९
२. वही – पृ.क्र. ६६

असंयत कुंतल उसकी पिठ पर बिखरे थे। दुर्दान्त दस्यु ने देखा, अपनी महिमा में अलौकिक एक तरूण बालिका! वह विस्मय से अपले हृदय को टटोलने लगा। उसे एक नई वस्तु का पता चला। वह थी ..... कोमलता!''१

प्रसाद की कहानियों में प्रकृति का मन को भानेवाला सौंदर्य दिखाई देता हैं। उसके साथ साथ व्यक्ति सौंदर्य का चित्रण भी कहानियों में हमें नजर आता है। कहीं स्त्री के रूप और सौंदर्य का चित्रण तो कहीं बच्चों के मुस्कान का अनूठा चित्रण हमें नजर आता है। एक–दुसरे के प्रति अपने पन के भाव जाग उठते हैं तो चेहरे का सौंदर्य और भी रंगीन नजर आता है। यह चित्रण प्रसाद ने ''स्वर्ग के खंड़हर'' इस कहानी में किया है। इसमें आया सौंदर्ये चित्रण है– ''तिस पर सौंदर्य के छँटे हुए जोड़ों – रूपवान बालक और बालिकाओंका हृदयहारी हास–विलास! संगीत की अबाध गति में छोटी – छोटी नावों पर उनका जल–विलास! किसकी आँखें यह देखकर भी नशे में न हो जायेगी– हृदय पागल, इंद्रियाँ विकल न हो रहेंगी! यही तो स्वर्ग है।''२

हिंदी कहानियों में जहाँ–जहाँ सौंदर्य नजर आया उसे अंकित या चित्रित करने का प्रयास इन्ही कहानिकारोंने किया हैं। पहाड़ों में बसनेवाले लोग और उससे एक और बात है हिमालय की सुशोभित पहाड़ों के बीच पले बड़े लोगों का व्यक्ति सौंदर्य इस तरह से चित्रित हुआ है जिसे पढ़ने का लालच हर एक के मन में हो जाता है। ऐसा ही एक चित्रण ''हिमालय का पथिक'' कहानी की नायिका किन्नरी के सौंदर्य को चित्रित किया नजर आता है। इसमें आया सौंदर्य चित्रण है– ''किन्नरी स्चमुच हिमालय कि किन्नरी है। ऊनी लंबा कुरता पहने है, खुले हुए बाल एक कपड़े से कसे हैं, जो सिर को चारों ओर टोप के समान बँधा है। कानो में दो बड़ें–बड़ें फीरोजे लटकते हैं। सौंदर्य है, जैसे हिमानी मंड़ित उपत्यका में वसंत की फूली हुई वल्लरी पर मध्याहन का

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"आकाश दीप" पृ.क्र. १०
२. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"स्वर्ग के खंडहर में" पृ. क्र. २३

आतप अपनी सुखद कांति बरसा रहा हो। हृदय को चिकना कर देनेवाला रूखा यौवन प्रत्येक अंग में लालिमा की लहरी उत्पन्न कर रहा है। प्रथिक सौंदर्य के चित्रण को अपनी कहानियों मे महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उनमे नारी के बालों का, उसकी आँखो का, उसके चेहरे का सौंदर्य चित्रित करने में वे सभी सफल नजर आते हैं। ऐसा ही एक सुनहरा चित्रण "समुद्र – संतरण" कहानी की नायिका धीवर बाला का, उसके चेहरे का सुंदर चित्रण हुआ है। इसमें आय सौंदर्य चित्रण है – "उसे न देखते हुए, मछली फँसाने का जाल लिये, एक धीवर – कुमारी समुद्र – तट के कगारों पर चढ़ रही थी, जैसे पंख फैलाये तिलली। नील भ्रमरी – सी उसकी दृष्टि एक क्षण के लिए कहीं नहीं ठहरती थी। श्याम – सलोनी गोधूली – सी वह सुंदरी सिकता में अपने पद – चिन्ह छोड़ती हुई चली जा रही थी। राजकुमार की दृष्टि उधर फिरी। सायंकाल का समुद्र – तट उसकी आँखे में दृश्य के उस पार की वस्तुओंका रेखा–चित्र खींच रहा था। जैसे; वह जिसको नहीं जानता था, उसको कुछ – कुछ समझने लगा हो, और वही समझ वही चेतना एक रुप रखकर सामने आ गई हो। उसने पुकारा – 'सुन्दरी' जाती हुई सुन्दरी धीवर बाला लौट आई। उसके अंधरो में मुसकान, आँखों में क्रिड़ा और कपोलों पर यौवन की आभा खेल रही थी, जैसे नील मेघ – खंड़ के भीतर स्वर्ण – किरण अरुण का उदय।" १

हिंदी कहानियों मे प्रकृति सौंदर्य, व्यक्ति सौंदर्य, शिल्प सौंदर्य हमें अलग – अलग कहानियों मे पढ़ने को मिल जाता है। प्रकृति में बसे पेड़, पौधे, फल और फूल उनका एक अपना सौदर्य होता हैं। रंग और गंध होती है और साथ ही एक सलोना रुप भी होता है। ऐसे प्राकृतिक सौंदर्य को अपनी कहानिया में बिखेरने का काम प्रसादने कर दिया है। उनकी "अपराधी" इस कहानी में भी व्यक्ति और प्रकृति के सौंदर्य का चित्रण निम्नलिखीत ढ़ंग से चित्रित किया है। इसमें आया सौंदर्य चित्रण है – "वह इस कुसुम – कानन से फूल चुन ले

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"समुद्र संतरण"–पृ.क्र. ७०

जाती और माला बनाकर बेचती। कभी – कभी उसे उपवास भी करना पड़ता। पर, वह काम न छोड़ती। आज भी वह फूले हुए कचनार के नीचे बैठी हुई, अर्ध्द – विकासित कामिनी – कुसूमो को बिना बेधे हुए, फंदे देकर माला बना रही थी। भँवरे आये, गुनगुनाकर चले गये। वसंत के दूतों का संदेश उसने न सुना। मलय – पवन अंचल उड़ाकर, रुखी लटों को बिखराकर, हट गया। मालिन बेसुध थी, वह फंदा बनाती जाती थी।"१

हिंदी साहीत्य को सजाने में प्रकृति के सौंदर्य का महत्वपुर्ण योगदान है। प्रकृति के सौंदर्य का कवि और कहानिकारों पर अच्छा असर दिखाई देता है। जहाँ – जहाँ उन्हें प्राकृतिक सौंदर्य का नजारा देखने को मिला वह पूरा का पूरा सौंदर्य चाहें वह आकाश और चाँद, तारों का हो, निले गगन का हो, आकाश में तैरने वाले काल बादल और बिजली का हो, पेड, पौंधे और फूलों का सौंदर्य हो उसको चित्रित करने का प्रयास कहानिकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से किया है। प्रसाद ने ऐसा ही सौंदर्य "रुप की छाया" इस कहानी के माध्यम से किया है। इसमे आया सौंदर्य चित्रण है – "हृदय शुन्य था, तारा – मंडल के विराट गगन के समान शून्य और उदास। सामने गंगा के उस पर चमकीली रेत बिछी थी। उसके बाद वृक्षों की हरियाली के ऊपर नीला आकाश, जिसमें पूर्णिमा का चंद्र, फीके बादल के गोल टुकडे के सदृश, अभी दिन रहते ही गंगा के ऊपर दिखाई दे रहा है। जैसे मंदाकिनी में जल–विहार करनेवाले किसी देव– व्दंव्द की नौका का गोल पाल।" २

हिंदी कहानियों में रुपवान स्त्री का सौंदर्य चित्रण तो किया है साथ ही साथ बच्चों के खुबसुरती का नजारा भी दिखाई देता है। इन व्यक्ति सौंदर्य के साथ – साथ, प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण भी हमें नजर आता है। हिमालय की गोद में बसे नदी, नाले, झरणे और उनकी क्रीड़ा का चित्रण हमें प्रसाद की

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"अपराधी"–पृ.क्र. ८८
२. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह –"रुप की छाया" – पृ.क्र. १००

कहानियों मे नजर आता है। ऐसा ही चित्रप्ण प्रसाद की "ज्योतिष्मती" इस कहानी में हमे दिखाई देता है। इसमें आया सौंदर्य चित्रण है – "एक बालिका, सुक्ष्म कँवल – वासिनी सुंदरी बालिका चारों ओर देखती हुई चुपचाप चली जा रही थी। विराट हिमगिरी की गोंद में वह शिशू के समान खेल रही थी। बिखरे हुए बालों को सम्हालकर उन्हें वह बार – बार हटा देती थी और पैर बढ़ाती हुई चली जा रही थी। वह एक क्रीड़ा – सी थी। परंतु सुप्त हिमांचल उसका चुंबन न ले सकता था। नीरव प्रदेश उस सौंदर्य से आलोकित हो उठता था। बालिका न जाने क्या खोजती चली जाती थी। जैसे शीतल जल का एक स्वच्छ सोता एकाग्र मन से बहता जाता हो।" १

हिंदी साहित्य में प्रकृति में रहनेवाले मानव जीवन और मानव के व्यक्तिगत सौंदर्य के चित्रण के साथ – साथ प्राकृतिक सौंदर्य का चित्रण भी हुआ है। कुछ लोगो के चेहरे पर हमेशा वसंत की तरह सुंदर और सुहानपन नजर आता है। मगर उसकी कमजोरियाँ उदासी का कारण बनाती है। तो व्यक्ति का एक अलग और अनोखा सौंदर्य हमे नजर आता है। ऐसा ही व्यक्तिगत सौंदर्य प्रसादने "रमला" इस कहानी में साजन नामक नायक का किया है। इसमें आया सौंदर्य चित्रण – "साजन के मन में नित्य बसंत था। वही बसंत जो उत्साह और उदासी का समझौता करता, वह जीवन के उत्साह से कभी विरत नहीं, न जाने कौनसी आशा की लता उसके मन में कली लेती रहती। तिस पर भी उदासीन साजन उस बड़ी –सी झील के तट पर, प्रय: निश्चेष्ट अजगर की तरह पड़ा रहता। उसे स्मरण नही, कब से वहाँ रहता था। उसका सुंदर सुगठित शारिर बिना देख – देख के अपनी इच्छानुसार मलिनता में भी चमकता रहता। उस झील का वह एकमात्र स्वामी था, रक्षक था, सखा था।"२

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"ज्योतिष्मती"–पृ.क्र. १०४
२. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"रमला" –पृ.क्र. १०७

हिंदी कहानियों में फूलों के सौंदर्य की तारीफ हुई हमें नजर आती है। फूल की गंध की महक से उसकी ओर आकर्षित होनेवाले मानव और अन्य, भ्रमर जैसे जीव, जंतूओं का चित्रण भी हमे कहानियों में नजर आता है। फूलों का रंग, गंध और उसकी कोमलता किसी को भी अपनी और आकर्षित किये बिना नहीं छोड़ती। ऐसा ही एक चित्रण प्रसादकी "बिसाती" इस कहानी में चित्रित किया हैं। इसमें आया सौंदर्य चित्रण हैं – "गुलाबों के दल में शीरीं का मुख राजा के समान सुशोभित था। मकरंद मुँह में भरे दो नील–भ्रमर उस गुलाब से उड़ने में असमर्थ थे, भौंरो के पद–पर निस्पंद थे। कँटीली झाड़ियों की कुछ परवा न करते हुए बुलबुलों का उसमें घुसना और उड़ भागना शीरीं तन्मय होकर देख रही थी।" १

निष्कर्ष :

इसप्रकार हम देखते है कि, प्रसाद की सभी कहानियाँ सौन्दर्य से परिपूर्ण है। प्रसाद ने अपने कहानियों में नारी सौंन्दर्य के साथ – साथ प्रकृति में आनेवाले पेड़, नदी, नाले, झरणे, पर्वत, फूल आदि का सौन्दर्य चित्रित किया है। प्रसाद के कहानियों में नारी सौन्दर्य हो या प्राकृतिक सौन्दर्य हो जिसका सही ढ़ंग से चित्रण कहानियों में मिलाता है।

---

१. जयशंकर प्रसाद –"आकाश दीप" कहानी संग्रह–"बिसाती"–पृ.क्र. ११३